ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 165-168**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

शेखपुरा जिला के संसाधनों का मूल्यांकन एवं प्रादेशिक नियोजन :एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 उपाध्याय विनोद कौशिक
सहायक प्राध्यापक– भूगोल विभाग, ए. एन. एस. कॉलेज, जहानाबाद (बिहार) भारत

Received-25.07.2026, Revised-04.08.2026, Accepted-11.08.2026, E-mail:upadhyayvinod 9525@gmail.com

सारांशः ***शेखपुरा बिहार के दक्षिण–मध्य भाग में स्थित अपेक्षाकृत छोटा, किंतु भौगोलिक एवं आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण जिला है। इसका गठन 31 जुलाई 1994 को तत्कालीन मुंगेर जिले से अलग करके किया गया था। वर्तमान में जिला छह प्रखंडोंकृ शेखपुरा, बरबीघा, अरियरी, चेवाड़ा, घाटकुसुम्भा तथा शेखोपुरसरायकृमें विभाजित है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 689 वर्ग किमी है। इसकी भौतिक संरचना में मध्यवर्ती चट्टानी–पहाड़ी भाग तथा उसके चारों ओर विस्तृत उपजाऊ जलोढ़ मैदान पाए जाते हैं। उत्तर–पूर्वी निम्न क्षेत्र में जल–जमाव की समस्या के कारण 'ताल क्षेत्र' का विकास हुआ है। यह भौगोलिक विविधता जिले में कृषि, खनिज, जल, मानव संसाधन और परिवहन के असमान वितरण को जन्म देती है।***

शेखपुरा की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। जलोढ़ मिट्टी, पर्याप्त वर्षा और सिंचाई की उपलब्धता कृषि विकास के लिए अनुकूल आधार प्रदान करती है। NABARD के जिला संभाव्यता–आधारित ऋण योजना (PLP) के अनुसार जिले में लगभग 45,432 हेक्टेयर क्षेत्र सिंचाई के लिए उपलब्ध तथा लगभग 24,234 हेक्टेयर क्षेत्र शुद्ध सिंचित क्षेत्र के रूप में दर्ज था। साथ ही, जिले में छोटे पहाड़ी क्षेत्रों से खनन तथा स्टोन–क्रशर गतिविधियाँ भी रोजगार का स्रोत हैं।

2011 की जनगणना के अनुसार शेखपुरा की जनसंख्या 6,36,342 थी तथा जनसंख्या घनत्व 924 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था। जिले की सामाजिक–आर्थिक संरचना में ग्रामीण जनसंख्या की प्रधानता, कृषि पर निर्भरता, रोजगार के सीमित अवसर और आधारभूत सुविधाओं में स्थानिक असमानता प्रमुख विशेषताएँ हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य शेखपुरा जिले के प्राकृतिक, कृषि, खनिज, मानव तथा आधारभूत संसाधनों का मूल्यांकन करते हुए ऐसी प्रादेशिक नियोजन रणनीति प्रस्तुत करना है, जिसमें संसाधनों का वैज्ञानिक उपयोग, पर्यावरणीय संरक्षण, कृषि विविधीकरण, ग्रामीण औद्योगीकरण, परिवहन–संपर्क, मानव संसाधन विकास और क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने पर बल दिया जाए।

कुंजीभूत शब्द– संसाधन, प्रादेशिक नियोजन, कृषि, जल संसाधन, खनिज संसाधन, मानव संसाधन, ग्रामीण विकास, क्षेत्रीय असमानता।

प्रस्तावना– भौगोलिक दृष्टिकोण से किसी क्षेत्र का विकास केवल उपलब्ध संसाधनों की मात्रा पर निर्भर नहीं करता, बल्कि संसाधनों की प्रकृति, वितरण, उपयोग की तकनीक, मानव क्षमता, परिवहन–संपर्क तथा प्रशासनिक नियोजन पर भी निर्भर करता है। यही कारण है कि आधुनिक क्षेत्रीय नियोजन में प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों के समेकित मूल्यांकन को विशेष महत्त्व दिया जाता है।

शेखपुरा जिला इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है। बिहार के अपेक्षाकृत छोटे जिलों में शामिल होने के बावजूद यहाँ कृषि योग्य जलोढ़ मैदान, पहाड़ी क्षेत्र, खनिज संसाधन, जल संसाधन, मानव संसाधन और रेल–सड़क संपर्क जैसी अनेक संभावनाएँ मौजूद हैं। जिला प्रशासन के अनुसार शेखपुरा के मध्य भाग में चट्टानी ऊँचाई तथा इसके चारों ओर उपजाऊ भूमि है। उत्तर–पूर्वी भाग के निम्न क्षेत्र में वर्षा के दौरान जल–जमाव होता है, जिसे स्थानीय भौगोलिक संदर्भ में ताल क्षेत्र कहा जाता है।

जिले का अधिकांश आर्थिक जीवन कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि के साथ पशुपालन, मत्स्यपालन, छोटे व्यापार, सेवा क्षेत्र तथा खनन आधारित गतिविधियाँ स्थानीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख घटक हैं। दूसरी ओर, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था की अधिक निर्भरता, सीमित औद्योगिकीकरण, रोजगार के अपर्याप्त अवसर, जल–जमाव, सिंचाई की स्थानिक असमानता और पर्यावरणीय दबाव क्षेत्रीय विकास के सामने प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

अतः शेखपुरा के लिए ऐसी नियोजन प्रणाली आवश्यक है, जो केवल जिला मुख्यालय के विकास तक सीमित न होकर विभिन्न प्रखंडों की भौगोलिक विशिष्टताओं को ध्यान में रखे। उदाहरण के लिए, ताल क्षेत्रों में जल प्रबंधन एवं मछलीपालन को, पहाड़ी क्षेत्रों में नियंत्रित खनन एवं वानिकी को तथा उपजाऊ मैदानी क्षेत्रों में कृषि विविधीकरण एवं कृषि–आधारित उद्योगों को प्राथमिकता दी जा सकती है।

अध्ययन के उद्देश्य एवं पद्धति– इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- शेखपुरा जिले के प्राकृतिक संसाधनों का मूल्यांकन करना।
- कृषि एवं भूमि संसाधनों की क्षमता का अध्ययन करना।
- जल एवं खनिज संसाधनों की विकासात्मक भूमिका का विश्लेषण करना।
- मानव संसाधन एवं सामाजिक आधारभूत संरचना का मूल्यांकन करना।
- विभिन्न क्षेत्रों के मध्य विकासात्मक असमानताओं की पहचान करना।
- संसाधनों के सतत उपयोग हेतु उपयुक्त प्रादेशिक नियोजन की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
- कृषि, उद्योग, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा पर्यावरण के समेकित विकास के उपाय सुझाना।

अध्ययन में द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। भारत की जनगणना 2011, जिला जनगणना पुस्तिका, शेखपुरा जिला प्रशासन, NABARD की जिला संभाव्यता–आधारित ऋण योजना तथा विभिन्न सरकारी पोर्टलों से उपलब्ध सूचनाओं को आधार बनाया गया है। जिला जनगणना पुस्तिका में गाँव एवं नगर स्तर तक जनसांख्यिकीय, सामाजिक–आर्थिक तथा आधारभूत सुविधाओं से संबंधित आँकड़े उपलब्ध हैं।

शेखपुरा की भौगोलिक स्थिति एवं संरचना– शेखपुरा जिला बिहार के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसके उत्तर में नालंदा एवं पटना, दक्षिण में नवादा एवं जमुई, पूर्व में लखीसराय तथा पश्चिम में नालंदा एवं नवादा जिले स्थित हैं। जिला मुख्यालय शेखपुरा गयादृकिऊल रेलमार्ग के निकट स्थित है। जिले का वर्तमान प्रशासनिक विभाजन एक अनुमंडल तथा छह विकास प्रखंडों में है। ये हैं: शेखपुरा, बरबीघा, अरियरी, घाटकुसुम्भा, चेवाड़ा तथा शेखोपुरसराय। जिला प्रशासन के अनुसार जिले में 314 गाँव और दो नगर क्षेत्र दर्ज थे। भौतिक संरचना की दृष्टि से जिले को मोटे तौर पर तीन भागों में समझा जा सकता है:

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

(क) पहाड़ी/चट्टानी क्षेत्रः मध्यवर्ती भाग में पहाड़ी एवं चट्टानी संरचना पाई जाती है। यह क्षेत्र खनिज एवं पत्थर संसाधनों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

(ख) जलोढ़ मैदानी क्षेत्रः पहाड़ी भाग के चारों ओर विस्तृत उपजाऊ जलोढ़ मैदान हैं। कृषि की दृष्टि से यह जिले का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है।

(ग) ताल क्षेत्रः उत्तर–पूर्वी निम्न भाग में वर्षा ऋतु में जल–जमाव होता है। उचित जल निकासी के अभाव में यह क्षेत्र पारंपरिक कृषि के साथ–साथ मत्स्यपालन और जल–आधारित आजीविकाओं के लिए विकसित किया जा सकता है।

प्राकृतिक संसाधनों का मूल्यांकन– भूमि संसाधनः शेखपुरा की सबसे बड़ी प्राकृतिक संपदा इसकी उपजाऊ भूमि है। अधिकांश मैदानी भाग में बालू, गाद और चिकनी मिट्टी से निर्मित जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है। सरकारी विवरण के अनुसार यह मिट्टी कृषि के लिए अत्यंत उपयुक्त है तथा क्षारीय एवं लवणीय निक्षेप अपेक्षाकृत कम पाए जाते हैं। NABARD के अनुसार, जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्र लगभग 689 वर्ग किमी तथा रिपोर्टेड क्षेत्र लगभग 62,100 हेक्टेयर था। इसमें कृषि योग्य भूमि का महत्त्वपूर्ण हिस्सा शामिल है। जिले में वन क्षेत्र अत्यंत सीमित है, जिससे भूमि उपयोग में कृषि का वर्चस्व स्पष्ट होता है। भूमि संसाधन की प्रमुख समस्या जोतों का छोटा आकार, भूमि की उत्पादकता में स्थानिक अंतर, जल–जमाव तथा कृषि पर अत्यधिक निर्भरता है।

जल संसाधनः जिले में कोई बड़ी बारहमासी नदी नहीं है। सोमि, कोरिहारी, ताती, कच्ची तथा रिजौन जैसी छोटी नदियाँ मुख्यतः वर्षा ऋतु में प्रवाहित होती हैं। जिले में वर्षा कृषि के लिए महत्त्वपूर्ण है, लेकिन वर्षा की स्थानिक एवं कालिक अनिश्चितता सिंचाई को आवश्यक बनाती है। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार जिले में सामान्य वर्षा के आधार पर लगभग 930 मिमी का आँकड़ा दर्ज किया गया है, जबकि विभिन्न प्रखंडों में इसमें अंतर पाया जाता है। सिंचाई संसाधनों का बेहतर उपयोग कृषि उत्पादकता बढ़ाने की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है। NABARD के आँकड़ों में लगभग 45,432 हेक्टेयर क्षेत्र सिंचाई के लिए उपलब्ध तथा 24,234 हेक्टेयर शुद्ध सिंचित क्षेत्र बताया गया है। इससे स्पष्ट है कि जिले में सिंचाई क्षमता मौजूद है, लेकिन उसे अधिक कुशल एवं समान रूप से उपयोग करने की आवश्यकता है।

कृषि संसाधन एवं कृषि अर्थव्यवस्था– शेखपुरा की अर्थव्यवस्था में कृषि की केंद्रीय भूमिका है। उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, सिंचाई तथा अनुकूल जलवायु के कारण धान, गेहूँ, दलहन, तिलहन तथा विभिन्न बागवानी फसलों की संभावनाएँ मौजूद हैं। जिले की कृषि व्यवस्था में दोहरी चुनौती दिखाई देती है। पहली चुनौती सिंचाई एवं जल उपलब्धता की है, जबकि दूसरी बाजार, भंडारण, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन से संबंधित है। कृषि को केवल उत्पादन–केंद्रित रखने के स्थान पर कृषि–मूल्य शृंखला आधारित नियोजन की आवश्यकता है। इसके अंतर्गतः उन्नत बीज, मृदा परीक्षण, सूक्ष्म सिंचाई, कृषि यंत्रीकरण, फसल विविधीकरण, भंडारण, शीतगृह, प्राथमिक प्रसंस्करण, किसान उत्पादक संगठन (FPO), डिजिटल बाजार सूचना को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। जिला प्रशासन वर्तमान में Soil Health Card, कृषि यंत्रीकरण, कृषि बाजार नेटवर्क, फसल बीमा तथा धान–गेहूँ खरीद जैसी सेवाएँ उपलब्ध करा रहा है। AGMARKNET के अंतर्गत शेखपुरा में एक बाजार दर्ज है। इसका विस्तार और स्थानीय कृषि उत्पादों के लिए अधिक संगठित विपणन तंत्र किसानों की आय बढ़ाने में सहायक हो सकता है।

खनिज संसाधन– शेखपुरा के मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र में पत्थर एवं संबंधित खनिज संसाधन आर्थिक गतिविधियों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। छोटे पहाड़ी क्षेत्रों का खनन तथा स्टोन क्रशर रोजगार और आय के स्रोत हैं, किन्तु खनन संसाधन का उपयोग पर्यावरणीय संतुलन को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। अनियंत्रित खनन सेः पहाड़ियों का क्षरण, धूल प्रदूषण, कृषि भूमि पर प्रभाव, भूजल पर दबाव, सड़क क्षति, जैव विविधता में कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

अतः खनन क्षेत्र में वैज्ञानिक खनन, पुनर्भरण एवं पुनर्वास योजना, वृक्षारोपण, जल–संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। जिला प्रशासन की हालिया गतिविधियों में खनन संबंधी वैत्त तथा निविदाएँ भी दिखाई देती हैं, जिससे इस क्षेत्र की प्रशासनिक एवं आर्थिक प्रासंगिकता स्पष्ट होती है।

मानव संसाधन– 2011 की जनगणना के अनुसार शेखपुरा की जनसंख्या 6,36,342 थी। जिले का जनसंख्या घनत्व 924 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था, जो अपेक्षाकृत उच्च जनसंख्या दबाव को दर्शाता है। जिले की सामाजिक संरचना में ग्रामीण आबादी की प्रमुखता है। इसलिए ग्रामीण मानव संसाधन को स्थानीय आर्थिक विकास से जोड़ना आवश्यक है। शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण, कौशल विकास तथा महिला स्व–सहायता समूहों को क्षेत्रीय नियोजन में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। केवल सामान्य शिक्षा के विस्तार के बजाय कृषि–प्रसंस्करण, खाद्य उद्योग, मशीन संचालन, कंप्यूटर, डिजिटल सेवाओं, स्वास्थ्य सेवाओं, निर्माण कार्य तथा उद्यमिता से जुड़े कौशल विकसित करने की आवश्यकता है।

परिवहन एवं आधारभूत संरचना– शेखपुरा की भौगोलिक स्थिति इसे बिहार के दक्षिण–मध्य भाग के परिवहन नेटवर्क से जोड़ने की क्षमता प्रदान करती है। जिला गया–किऊल रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है और सड़क संपर्क के माध्यम से क्षेत्रीय बाजारों से संबंध स्थापित करता है। परिवहन व्यवस्था का कृषि विकास से सीधा संबंध है। यदि गाँवों से बाजार तक कृषि उत्पाद कम समय और कम लागत में पहुँचें तो किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्त हो सकता है। इसलिए ग्रामीण सड़कों, पुल–पुलियों, बाजार संपर्क मार्गों और सार्वजनिक परिवहन का विकास प्रादेशिक नियोजन का आवश्यक हिस्सा होना चाहिए।

सामाजिक आधारभूत संरचना– जिले में स्वास्थ्य एवं शिक्षा संबंधी संस्थाओं का विस्तार हुआ है। जिला प्रशासन के अनुसार यहाँ एक सदर अस्पताल तथा 17 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र/समान स्वास्थ्य इकाइयों का उल्लेख है। NABARD के जिला प्रोफाइल में प्राथमिक विद्यालयों, स्वास्थ्य केंद्रों तथा बैंकिंग सुविधाओं से संबंधित आधारभूत ढाँचे का भी उल्लेख है। फिर भी ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच स्वास्थ्य, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, बैंकिंग तथा डिजिटल सेवाओं की गुणवत्ता में अंतर को कम करना आवश्यक है।

शेखपुरा जिले की प्रमुख समस्याएँ– संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद जिले के विकास में निम्न प्रमुख समस्याएँ दिखाई देती हैंः

कृषि पर अत्यधिक निर्भरताः अर्थव्यवस्था में कृषि का वर्चस्व होने के कारण प्राकृतिक आपदा या बाजार मूल्य में गिरावट का सीधा प्रभाव ग्रामीण आय पर पड़ता है।

जल–जमावः ताल क्षेत्र में वर्षा ऋतु के दौरान जल–जमाव कृषि एवं आवागमन को प्रभावित करता है।

सिंचाई की असमानताः सिंचाई क्षमता होने के बावजूद सभी क्षेत्रों में समान स्तर पर सिंचाई उपलब्ध नहीं है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

औद्योगिक पिछड़ापनः बड़े एवं संगठित उद्योगों का अभाव है। ग्रामीण स्तर पर कृषि–आधारित सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों की पर्याप्त संभावनाएँ अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुई हैं।

खनन से पर्यावरणीय दबावः पत्थर खनन एवं क्रशर गतिविधियों के कारण पर्यावरणीय समस्याओं की संभावना रहती है।

रोजगार की समस्याः कृषि के अलावा स्थानीय स्तर पर पर्याप्त रोजगार अवसर न होने से श्रमिकों का बाहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन हो सकता है।

बाजार एवं भंडारण की कमीः कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन तथा सुरक्षित भंडारण की सीमित सुविधाएँ किसानों की आय को प्रभावित करती हैं।

प्रादेशिक नियोजन की आवश्यकताः प्रादेशिक नियोजन का मूल उद्देश्य किसी क्षेत्र के विभिन्न प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों के बीच समन्वय स्थापित करके संतुलित विकास सुनिश्चित करना है। शेखपुरा के संदर्भ में एक समान नीति के बजाय क्षेत्र–विशिष्ट नियोजन अधिक प्रभावी होगा। प्रस्तावित क्षेत्रीय नियोजन मॉडलः क्षेत्र, प्रमुख संसाधन, प्रमुख समस्या, नियोजन की प्राथमिकता, मध्य पहाड़ी क्षेत्र, पत्थर, खनिज, पर्यावरणीय दबाव, नियंत्रित खनन एवं पुनर्वनीकरण, उपजाऊ मैदानी क्षेत्र, जलोढ़ मिट्टी, कृषि, कृषि पर निर्भरता, कृषि विविधीकरण व प्रसंस्करण, ताल क्षेत्र, जल, मत्स्य संसाधन, जल–जमाव, जल प्रबंधन एवं मत्स्यपालन, शहरी/अर्ध–शहरी क्षेत्र, बाजार, सेवाएँ, अव्यवस्थित विस्तार, नियोजित नगरीकरण, ग्रामीण क्षेत्र, श्रम, कृषि, बेरोजगारी, कुटीर एवं कृषि–आधारित उद्योग।

प्रादेशिक विकास की रणनीति– कृषि–आधारित औद्योगीकरणः धान, गेहूँ, दलहन, तिलहन, सब्जियों और अन्य कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण के लिए छोटे उद्योग विकसित किए जाएँ। इससे उत्पादन और बाजार के बीच मूल्य श्रृंखला मजबूत होगी।

ताल क्षेत्र का समेकित विकासः जल–जमाव को केवल समस्या के रूप में देखने के बजाय इसे संसाधन में बदला जा सकता है। वर्षा जल संचयन, मछलीपालन, जल–सहिष्णु फसलों तथा मौसमी कृषि को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

सिंचाई विकासः छोटे जलाशय, तालाब, चेक–डैम, वर्षा जल संचयन, सूक्ष्म सिंचाई तथा भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देना चाहिए।

खनन क्षेत्र का वैज्ञानिक प्रबंधनः खनन क्षेत्र के लिए पर्यावरणीय वहन क्षमता निर्धारित की जाए। खनन समाप्त होने के बाद भूमि पुनर्वास तथा वृक्षारोपण अनिवार्य किया जाए।

ग्रामीण औद्योगीकरणः कृषि–आधारित उद्योग, डेयरी, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, मत्स्यपालन, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प और ग्रामीण सेवा उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सकता है।

मानव संसाधन विकासः प्रखंड स्तर पर कौशल विकास केंद्र स्थापित करके स्थानीय युवाओं को बाजार की आवश्यकता के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

महिला सशक्तीकरणः स्व–सहायता समूहों को कृषि प्रसंस्करण, दुग्ध उत्पादन, खाद्य निर्माण, सिलाई, डिजिटल सेवाओं तथा लघु उद्यमों से जोड़ना चाहिए।

परिवहन–आधारित विकासः प्रमुख कृषि उत्पादन क्षेत्रों को बाजार, रेलवे स्टेशन तथा जिला मुख्यालय से जोड़ने के लिए ग्रामीण सड़क नेटवर्क को मजबूत किया जाना चाहिए।

प्रस्तावित प्रादेशिक नियोजन का प्रभाव– यदि उपर्युक्त योजनाओं को समन्वित रूप से लागू किया जाता है, तो इसके कई सकारात्मक प्रभाव होंगे।

आर्थिक प्रभावः कृषि उत्पादकता, किसानों की आय तथा स्थानीय रोजगार में वृद्धि होगी। कृषि प्रसंस्करण उद्योगों से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मूल्य संवर्धन होगा।

सामाजिक प्रभावः शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और महिला भागीदारी में सुधार से जीवन–स्तर बेहतर होगा।

स्थानिक प्रभावः पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों और विकसित बाजार केंद्रों के बीच असमानता कम होगी।

पर्यावरणीय प्रभावः वैज्ञानिक खनन, जल संरक्षण, भूमि संरक्षण तथा वृक्षारोपण से प्राकृतिक संसाधनों का दीर्घकालिक संरक्षण संभव होगा।

प्रवासन पर प्रभावः स्थानीय स्तर पर रोजगार अवसरों के विस्तार से मजबूरी में होने वाले बाहरी प्रवासन को कम किया जा सकता है।

कृषि पर प्रभावः फसल विविधीकरण, सिंचाई, मृदा परीक्षण और आधुनिक कृषि तकनीकों से उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

निष्कर्ष– शेखपुरा जिला क्षेत्रफल की दृष्टि से छोटा है, लेकिन संसाधन क्षमता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसके विकास की सबसे बड़ी शक्ति इसकी उपजाऊ जलोढ़ भूमि, कृषि क्षमता, सिंचाई की संभावनाएँ, पहाड़ी एवं खनिज संसाधन, मानव संसाधन तथा क्षेत्रीय परिवहन संपर्क हैं। दूसरी ओर कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, जल–जमाव, सीमित औद्योगिकीकरण, रोजगार के सीमित अवसर तथा खनन से उत्पन्न पर्यावरणीय दबाव प्रमुख चुनौतियाँ हैं। जिले के संसाधनों का मूल्यांकन यह स्पष्ट करता है कि शेखपुरा के लिए पारंपरिक क्षेत्रीय विकास मॉडल पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता एक ऐसे समेकित एवं स्थानिक प्रादेशिक नियोजन की है, जिसमें भौतिक भूगोल और सामाजिक–आर्थिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित हो। उपजाऊ मैदानी क्षेत्रों को कृषि एवं कृषि–आधारित उद्योगों के केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। ताल क्षेत्रों में जल प्रबंधन, मत्स्यपालन और जल–सहिष्णु कृषि को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। पहाड़ी क्षेत्रों में खनन को वैज्ञानिक एवं पर्यावरण–अनुकूल बनाया जाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल विकास, महिला उद्यमिता और लघु उद्योगों के माध्यम से रोजगार सृजन की आवश्यकता है। भविष्य की जिला योजना में "संसाधन आधारित विकास + मानव संसाधन विकास + पर्यावरणीय स्थिरता + क्षेत्रीय संतुलन" को मूल आधार बनाया जाना चाहिए। इससे शेखपुरा न केवल कृषि उत्पादन में आत्मनिर्भर बन सकता है, बल्कि बिहार के एक सुदृढ़ ग्रामीण–औद्योगिक एवं संतुलित प्रादेशिक विकास मॉडल के रूप में भी विकसित हो सकता है। अंततः कहा जा सकता है कि शेखपुरा की वास्तविक विकास क्षमता उसके संसाधनों की मात्रा में नहीं, बल्कि उनके वैज्ञानिक, न्यायसंगत, पर्यावरण–अनुकूल और स्थानिक रूप से संतुलित उपयोग में निहित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत की जनगणना 2011, District Census Handbook, Sheikhpura, Part–A: Village and Town Directory, Directorate of Census Operations, Bihar. Census India.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

2. भारत की जनगणना 2011, District Census Handbook, Sheikhpura, Part-B: Primary Census Abstract, Directorate of Census Operations, Bihar. Census India.
3. Census of India 2011, District Highlights-Sheikhpura, Office of the Registrar General-Census Commissioner, India.Census India.
4. NABARD, Potential Linked Plan 2022–23: Sheikhpura District, Bihar. NABARD .
5. शेखपुरा जिला प्रशासन, About District.Geography, Economy, Infrastructure and Administration Government of Bihar. Sheikhpura District.
6. शेखपुरा जिला प्रशासन, Agriculture Market Network (AGMARKNET), Government of Bihar. Sheikhpura District.
7. शेखपुरा जिला प्रशासन, Soil Health Card, Animal Husbandry, Dairy–Fisheries, Government of Bihar. Sheikhpura District.
8. शेखपुरा जिला प्रशासन, District Demography, Government of Bihar. Sheikhpura District.
9. Census of India, Primary Census Abstract-C.D. Block Wise, Sheikhpura, 2011. Census India.
10. शेखपुरा जिला प्रशासन, District Documents, Mining and Planning-related Notices, Government of Bihar. Sheikhpura District.

*****